मानननीय मुख्यमंत्री, बिहार श्री नीतीश कुमार के द्वारा दिनांक–15.05.2015 को दिये गये भाषण का ट्रांसक्रिप्सन (लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग)

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे माननीय भवन निर्माण एवं लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण मंत्री, श्री दामोदर राउत जी, इस कार्यक्रम में उपस्थित बिहार विधान सभा के माननीय सदस्य और सत्ता पक्ष के सचेतक श्रीमती नीता चौधरी जी, लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग के और मंत्रिमंडल सचिवालय विभाग के प्रधान सचिव श्री शिशिर सिन्हा जी, हमारे सचिव श्री चंचल कुमार जी यहां उपस्थित अन्य सभी अधिकारीगण, अभियंतागण, स्वच्छता के कार्य में लगे हुए विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधिगण, प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के यहां उपस्थित प्रतिनिधिगण, देवियो और सज्जनों।

मैं सबसे पहले लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग को बधाई देता हूं कि उन्होंने पाईप जलापूर्ति से संबंधित अनेक योजनाओं का उद्घाटन कराया है और कई योजनाओं का शिलान्यास भी कराया है। और इसमें दो प्रकार की पाईप जलापूर्ति योजनाएँ है एक बिजली पर आधारित है। और दूसरी मिनी पाईप जलापूर्ति योजनाएं है जो सोलर ऊर्जा पर आधारित है। मुझे कई स्थानों पर जाकर देखने का मौका मिला है, स्वच्छ जल की आपूर्ति से संबंधित कई योजनाओं को तो आज मुझे खुशी है कि कतिपय योजनाओं का शिलाान्यास और उद्घाटन हुआ है और प्रधान सचिव ने यह भी बताया कि एक महीने के अन्दर और कई योजनाएं तैयार हो जायेंगी

जिनका उद्घाटन हो सकेगा और कई परियोजनाएं जो स्वीकृत हुई है उनका शिलान्यास भी होगा। शिलान्यास और उद्घाटन का कार्यक्रम तो एक माध्यम होता है, इस विषय पर जोड़ डालने का। स्वच्छता एक व्यापक विषय है। स्वच्छ पेयजल उसका एक हिस्सा है। हर इंसान को स्वच्छ पेयजल मिलना चाहिए। आजादी के इतने वर्षों बाद भी हम अपने देश के सभी नागरिकों तक स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति नहीं कर पाये हैं। यह दुर्भाग्य का विषय है। लेकिन अब इस विषय पर काफी ध्यान दिया जा रहा है। पहले कुओं से लोग पानी पीते थे। बाद में चापाकल का दौर आया दौर आज भी जारी है और उसके बाद लोगों को लगा कि जैसे शहरो में पाइप जलापूर्ति योजना होती है, नियमित रूप से पानी की आपूर्ति होती है, और निर्धारित अवधि में, सीधे स्वच्छ जल प्राप्त करतें हैं। तो जो काम बड़े शहरों में होता रहा है, वह गांव–गांव हो। चूँकि नागरिकों की जरूरतें एक समान है और उनका अधिकार भी एक बराबर है। तो अभी तक तो मात्र चार प्रतिशत् पाईप जलापूर्ति योजना से लोग आच्छादित थे। अब ये लक्ष्य है कि अगले वर्ष तक 16–17 तक 20 प्रतिशत लोगों का आच्छादन किया जाये और इस बीच में जो चापाकल से पानी मिलना चाहिए। पहले तो देखते थे कि गांव में एक या दो चापाकल हो गया तो हो गया उसका आच्छादन हो गया। लेकिन अब 100 लोगों पर यानि लगभग 20 परिवार पर एक चापाकल होना चाहिए। तो चापाकल से संबंधित जो केन्द्र प्रायोजित योजनाएँ थी उसके अलावे और उससे आगे बढ़ कर राज्य में हमलोगों ने चापाकल की योजनाएँ चालू की। और फिर जो माननीय विधायको की अनुशंसा पर चापाकल लगाए जाते हैं इसके अलावे जो योजनाएँ थी। चापाकल के स्थल चयन का अधिकार वार्ड सदस्य को दिया गया ताकि वे ठीक ढंग से स्थल का चयन करें और एक संतुलित ढंग से चापाकल लग सके ताकि कुछ घरों के बाद एक चापाकल

जरूर उपलब्ध रहे। और लोगों को पानी मिल सके। लेकिन और उससे जो बड़ी योजना है, पाईप जल आपूर्ति योजना है। सोलर एनर्जी पर आधारित पाईप जल आपूर्ति योजना है। ये बहुत उपयोगी है। और इसके अलावे जो स्वच्छ पेय जल मिलना चाहिए तो हमारे देश में भी अनेक हिस्से हैं जहाँ के पानी की गुणवत्ता ठीक नहीं है। और कई प्रकार की परेशानी मिल रहीं हैं जिस इलाके में आयरन की मात्रा ज्यादा हैं पानी में। कहीं फ्लोराइड है, कहीं आरसेनिक है। तो अपने बिहार में मुख्यतः इन तीन चीजों से प्रभावित इलाके बहुत है। और मैं उस एक दृश्य को भूल नहीं सकता हूँ जो मुंगेर जिले के खैरा गांव में मैं गया था 2010 में, विश्वास यात्रा के दौरान। और वहां हमने देखा था वह पूरा का पूरा गांव फ्लोराईड से प्रभावित था। और दर्जनों लोग एक स्थान पर एक सरकारी बिल्डिंग में लेटे हुए थे। और फ्लोराइड तो ज्यादा, हमारा जो नर्व सिस्टम है उसी पर उसी को प्रभावित करता है। आरसेनिक चर्म रोग पैदा करता है। और आरसेनिक से भी संबंधित एक योजना जो भोजपुर जिले में गंगा नदी के तट पर वहां भी मुझको जाने का मौका मिला था और उसको देखने का। जब काम हो रहा था तब भी और बाद में जब योजना पूरी हुई। तो ये जो समस्याओं से प्रभावित इलाके हैं, वहाँ स्वच्छ पेय जल की आपूर्ति हो ये हमारे लिये सबसे बड़ी चुनौती है। अब जो योजनाएं मंजूर करतें हैं हम खैरा गांव में गये थे आज पांच साल लगभग हो रहा है। यही मई का महीना और इसी मई के महीने में हमलोग 2010 में गये थे। हमलोगों ने देखा था वहां की हालत। योजना की मंजूरी दी गयी। लेकिन योजना की मंजूरी दी गयी और पहले उसमें व्यवधान आ गया। चूंकि वहां पर उस गांव में जो पानी की सप्लाई होनी थी जो खड़गपुर के पास डैम है, वहां से सप्लाई होनी थी। अब इसके लिए लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग को जो फोरेस्ट एवं इन्वायरमेंन्ट डिपार्टमेंट से क्लियरेंस लेना

चाहिए था, ये ले नहीं पाये। मामला अटक गया। अब इसके बाद जब काम शुरू हुआ तो इनके सामने कुछ कॉन्ट्रैकचुअल समस्याएं आ गयी तो आज मुझे अफसोस होता है किसी न किसी कारण से योजना पूरी नहीं हो पाती है तब जब कि सरकार के द्वारा इन योजना को मंजूरी दी जाती है। और उसके धन का प्रबंध किया जाता है। मैं विशेष रूप से इस बात की चर्चा कर रहा हूं। योजनाओं की मंजूरी दी जाती है, राशि का आवंटन कर दिया जाता हैं और उसका अगर ससमय क्रियान्वयन न हों, योजना अगर पूरी न हो तो लोगों को लाभ नहीं मिलता है। और फिर जब प्रोजेक्ट डिले होता है तो उसके बाद उसमें और राशि की आवश्यकता पड़ती है। जो काम हम किसी खास राशि में कर सकते है। समय पर काम को नहीं करने के कारण वो राशि दो गुनी हो जाती है। और इलाके को हम स्वच्छ पेय जल आपूर्ति कर सकते थे नहीं हो पाता है। तो ये जानकर अफसोस होता है कि अबतक कई योजनाएँ अधूरी रह गयी। मैने आते–आते मंत्री जी से भी पूछा और प्रधान सचिव से भी पूछा कि इस तरह की बात नहीं होनी चाहिए। हरेक चीज को पहले ही देखना चाहिए। अब हम कहीं गये थे तो हमने देखा कि, एक स्कूल में हम गये वहां देखा कि चापाकल में एक मिडियम लगाकर के, एक मिनी स्किम है। जिसके जरिए अगर वो फ्लोराइड अफेक्टेड वो इलाका है तो स्कूलों में सबसे पहले चापाकल में वो एक टानेस्तर लगाया जा सकता है, एक एडिसन किया जाता है चापाकल में और उसमें एक जो मिडियम लगाया जाता है जिसके माध्यम से वो पानी शुद्ध होता है, प्यूरीफाइ होता है तो हमने पूछा कि आखिर कार इसकी क्षमता कितनी है तो उन्होंने एक निश्चित लीटर बताया तो हमने कहा कि इसको मापने का क्या तरीका है भाई जो ये मिडियम है वो 5000 लीटर तक पानी को प्यूरिफाइ कर सकता है तो कोई मापने का जरिया भी होना चाहिए कि 5000 लीटर का प्रवाह हो चुका और

उसके पहले उस मिडियम को रिपलेस किया जाना चाहिए वरना वो और खतरनाक हो जायेगा। लोग तो समझ रहे कि इसमे इक्युपमेंट लगा हुआ है तो पानी शुद्ध हो रहा है। और दरअसल उसकी मिडियम की क्षमता समाप्त हो चुकी थी। वही पानी लोग पियेंगे, बच्चे भी पियेंगे तो फिर वो उनको बीमारी पकड़ेगी। दूसरा हमने कहा कि आखिर इसका क्या तरीका है, आपलोग एक बार लगा देते है और इसको कोई देखता है या नहीं देखा तो पता चला कि इसके लिए कोई सुनिश्चित योजना नहीं हैं तो हमने उसी समय कहा कि कोई स्किम आप बनाते नहीं है किसी प्रकार की बात आई जो इनकी सोलर एनर्जी पर आधारित है एक योजना थी जिसका हमसे उद्घाटन कराया गया था किसी गांव के दौरे पर था तो इसका हमलोंगो ने इसका उद्घाटन किया था तो वहां भी हमने यही प्रश्न पूछा मुझे पता चला था कि एक लाख लीटर तक पानी को प्यूरिफाई करने के लिए क्षमता है तो हमने कहा भाई एक लाख लीटर के बाद क्या होगा? कौन प्रजेन्ट करेगा कि एक लाख पानी निकला इस मिडियम से या एक लाख दस हजार लीटर निकल गया तो व्यवस्था तो ऐसी होनी चाहिए कि इसको एक आप औसत की दृष्टिकोण से देखते हैं तो समय पूर्व इसका रिपलेसमेंन्ट होगा। फिर ये आयेगा कहां से इसका सप्लाई चेन मेन्टेन होना चाहिए कि अगर उसको रिपलेस करना है तो डिपार्टमेन्ट के पास ये साफ तौर पर सबको मालूम होना चाहिए। कि साहब इसका पिरियड इतने दिनों का है इसके अन्दर इसका रिपलेस्मेन्ट होना चाहिए। और जब रिपलेसमेन्ट होना है तो वह चीज आपके पास उपलंध होना चाहिए। ऐसा तो नहीं होना चाहिए कि एक लाख लीटर उसने प्यूरिफाई कर दिया अब मिडियम बदलना है तो मिडियम बदलने के लिए उसका टेन्डर निकाल रहें हैं। तो इस बीच में क्या होगा तो इन सारी कमियो को देखते हुए हमने सुझाव उस समय दिया था कि आप अगर कोई

प्रोजेक्ट बनाइये तो इसके साथ–साथ मेन्टेनेन्स कॉट्रैक्ट कीजिए। कि पांच वर्षों तक इसका मेन्टेनेन्स भी ये पर्टिकुलर कम्पनी देखेगी, ये उनकी जवाबदेही होगी और समय उसमें जो भी इक्यूपमेंट में चेन्ज करना है, मिडियम का रिपलेसमेन्ट करना है, तो आप करेंगे। और उसके बाद शायद ये योजना इनलोगों ने लागू की है तो हम समझते है कि अब उसकी स्थिति बेहतर होगी और खास करके उस समय भी हमने कहा था कि ये जो आप चापाकल में लगा रहें है, ये है तो सुविधा जनक लेकिन आप निशचिन्त हो जाते है, कि हमने इस चापाकल में, हैण्डपम्प में, फ्लोराइड से प्रभावित इलाके में हमने लगा दिया। आप कागज पर तो लिख देंगे इतने चापाकल को हमने इसका इसका जो एडिसन होता हमने जोड़ दिया लगा दिया लेकिन वो सचमुच फन्क्शनल है या नहीं है इसकी निगरानी की तो कोई व्यवस्था है ही नहीं तो हर ऐसी चीज में इसका होना चाहिए और जो दूसरी बात मैंने देखा कि भाई अब आप पाइप जल आपूर्ति योजना बना देते हैं तो पाइंप जल आपूर्ति योजना बना देते हैं, तो इसको ऑपरेट कौन करेगा ? मेन्टेन कौन करेगा ? चलायेगा कौन ? उसकी देखभाल कौन करेगा उसका रख–रखाव कौन करेगा ? आप योजना तो बना देंगे, लेकिन जो पहले जो योजनाएं थी। उसमें ये सारी कमियां थी हमने स्पॉट विजिट के दौरान ये सारी चीजें देखी और उसका हमने सुझाव दिया और उसके बाद आप लोगो ने इसको अपने स्कोप ऑफ वर्क में इसे शामिल किया। ये खुशी की बात है। लेकिन स्कोप ऑफ वर्क में शामिल किया है और वो देखिए कि फंक्शनल है या नहीं। आप तो किसी स्किम का उद्घाटन तब तक नहीं करवाइये जब तक की आपका ऑपरेशन और मेन्टेनेन्स कॉन्ट्रैक्ट भी साथ–साथ फाइनलाइज नहीं हो जाता। वरना ये तो अपने को धोखा देने के समान है कि आप मान रहे कि हमने यहां पर जल आपूर्ति योजना चालू कर दी और वो जल आपूर्ति योजना ठीक

ढंग से फंक्शनल है भी या नहीं है इसको रिस्टोर करना चाहिए। अब वो वक्त आ गया कि हम इन बारिकियों तक जायें, किसी भी चीज के तह तक जायें। अब आरसेनिक से प्रभावित इलाके, उसके लिए बड़ी योजनाएं बनती है। वो योजनाएं न सिर्फ टेक्नोलॉजी, जो तकनीक है उसके मामले मे बिलकुल इम्प्रूभमेन्ट टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल किया जाता है जो तकनीक सिद्ध हो चुकी है। यह वाजिब, सही है और प्रभावी है उसी को अपनाया जाता है। तो ये देखना चाहिए कि फिर वो लोगों को लाभ पहुचाएं वरना होता क्या है। थोड़ी सी भी चूक होगी तो एक गैप क्रियेट होगा और उस गैप के पिरियड में आप कल्पना करिए कि लोगों को फिर वो बीमारी ग्रसित करेगी। एक बार फिर उस पाानी को पीने के लिए रात में उसको प्यूरीफाई कर लिए अब प्यूरीफाई करने के बाद फिर कोई अन्य प्यूरीफाइड पानी पी लेगा तो उसके शरीर पर असर और तेजी से होगा। इसलिए इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि आपने अगर किसी समस्या का समाधान किया तो उसके साथ–साथ इन दृश्यों को देखिए। तो एक पीने का पानी का सवाल है। अभी एक फिल्म दिखाई जा रही थी। आप लोगों ने देखा होगा। तो हमने देखा कि भाई ठीक है आपलोगों ने उत्साह से ये फिल्म देखा कि हाथ साबुन से धोने के बाद ही शौच के बाद हाथ साबुन से धोइए और खाने के पहले हाथ साबुन से जरूर धोइए तो उसमें तो जल का प्रयोग कर रहे थे जो निरंतर प्रवाहित होता है तो हमलोग एक अलग ढंग से इस बात का भी प्रचार करते है कि बुंद बुंद पानी की कीमत को समझिए और पानी का उतना ही इस्तेमाल करिए जितना आवश्यक हो वरना लोग दाढ़ी बनाते रहते टैप को खोल देते हैं पानी चल रहा है। उनको लगता है कि भाई बीच में फिर एक बार उसके नजदीक करना होगा या ब्रस कर रहे टैप को खोले हुए है तीन मिनट ब्रस कर रहें है। पानी चल रहा है अब पता नहीं कल्पना करिए कितने पानी का

दुरूपयोग हो रहा है बुंद–बुंद जल की रक्षा यह बच्चो को सिखाया जा रहा है। स्कूलों में तो जब फिल्म बना रहे है तो उसमें इसको इन्प्रीरिट रखना चाहिए। ऐसा नहीं है कि सिर्फ आप साबुन से हाथ धोने की बात को प्रचारित करिए। आप स्वच्छता से संबंधित हरेक पहलू को ध्यान में रखकर किसी भी फिल्म को बनाइये और उसको दिखाइये, ये होना चाहिए। ऐसा नहीं होना चाहिए कि पानी का पोट निरंतर जारी है अब आप बाहर साबुन से हाथ धो रहे है पानी का तो दुरूपयोग हो रहा है तो इसलिए एक विजुअल का इम्पैक्ट पड़ता है। बात जो बोल रहे है उसका असर पड़ता है लेकिन उसका उतना असर नहीं पड़ता है, लेकिन एक विजुअल है, जो दृश्य आप दिखा रहे हैं, उसका असर पड़ता है। वो मानव पटल पर अंकित हो जाता है। तो इसलिए जब विजुअल दिखाइये तो वो हर तरह से होना चाहिए थोड़ा सा एडिटिंग का प्रॉबलम आपको आता है इसको ठीक ढंग से एडिट करिए और एक–एक चीज हर चीज इनटरलि है देखिए शौचालय का इस्तेमाल क्यों शौचालय में घुसे खुले में शौच करते थे, आबादी कम थी तो उस समय गांव गांव में सुअर इतना था कि सबेरे तक साफ कर देता था। अब आदमी बढ़ गया सुअर घट गया। अब तो सुखता रहता है मक्खियां उस पर बैठती है, फिर आपके भोजन पर बैठती है और आप जो बीमारी अपने आप में लेते है। इस लिए हमलोग बार–बार कहते है खुले मे शौच करने से, नहीं करने से, अगर शौचालय का प्रयोग करें तो नब्बे प्रतिशत बीमारी से आप बचते है। तो हरेक चीज को इंटिग्रेट करना चाहिए और अब खुशी है कि अब शौचालय के निर्माण पर ज्यादा राशि का आवंटन होना प्रारंभ हो गया है। वरना शौचालय तो बना दिया अब खुले में शौच मत करिए। उसमें हम सम्मान की बात करते है। तो भाई उस पर कहीं पर्दा डाल देने से आ हवा चल गया पर्दा उड़ गया तब क्या फर्क पड़ा तब खुले में शौच करिए या बाहर में शौच

करिए तो इसलिए उसमें दरवाजा जरूर होना चाहिए। यहीं पर जयराम रमेश जी आये थे संवाद में तो उस समय वो विभाग के मंत्री थे तो उनको हमने बताया कि जयराम जी जैसा शौचालय बन रहा है, सरकारी योजना में, जो लोग इसका डिजाईन बनाते हैं, एक बार उनसे कहिए शौचालय में बैठकर दिखाएं। अगर वो बैठ जाएं ठीक से तब फिर हम मान जायेंगे। अरे कसरत करके बैठना पड़ता भाई अब कोई उपर से एक वो पर्दा लगा दिया, पर्दा लगा दिया, हवा चला, पर्दा उड़ गया आ कोई सामने से आदमी गुजर रहा। इन चीजों पर ध्यान रखना चाहिए, तो उसके सामने दरवाजा उसमें जरूर लगना चाहिए। लेकिन उसका पर्दा, वाकई होना चाहिए, पर्दा ठोस होना चाहिए, कपड़े का पर्दा या प्लास्टिक का पर्दा, इससे काम नहीं चलेगा तो अब खैर अब वो बेहतर बन रहें है। तो इन सब चीजो का जो इन सब चीजों पर ध्यान एक साथ शौचालय है, शुद्ध स्वच्छ पेयजल है, स्वच्छता के और चीज है इन सब चीजों पर ध्यान देना चाहिए। और धीरे–धीरे लोगों की आदतों में बदलाव लायेंगे सबसे बड़ी चीज है। हमारी आदते है आदतें ऐसी हो गयी है। अच्छा पढ़ा–लिखा आदमी को देखिएगा कि खाना शुरू कर देता है बिना हाथ–ओत धोये हुए। तो कुछ आदते ऐसी हो गयी है तो आदतों में बदलाव जरूरी है और यहां बिहार में बहुत अहम, बहुत उपयोगी है, बहुत आवश्यक है मनुष्य के विकास के लिए। तो चलिए आज मुझे खुशी हुई कि आपने ये अवसर दिया। आपको बधाई तो हमने दे ही दी कि अच्छा काम कर रहे हैं इसी तरह से आगे बढते रहने से हर नागरिक को स्वच्छ पेय जल उपलब्ध हो जायेगा और धन्यबाद इसलिए मैं देता हूं कि आपने इस विषय पर उपयुक्त शब्द कहने का अवसर दिया जो मेरी प्रारम्भ से राय है। और जब 2005 में सरकार बनी, 2006 से हम बाहर घुमते थे तो शौचालय निर्माण के लिए हम तो लोगों से मसाल जलबा कर संकल्प करवाते थे। तो

शौचालय का निर्माण हुआ और बिहार के ही दीवारों पर लिखा गया कि पहले शौचालय तब दीवालों कई वर्षों के बाद इसपर कुछ विवाद हुआ। तो ये ं हमलोगों के यहा तो प्रारंभ से इस बात के लिए बहुत जोड़ दिया गया लेकिन हमलोग नीति के स्तर पर, योजना बनाने के स्तर पर और धन का प्रबंध करने के स्तर पर अपनी भूमिका निभाते है। अब आप सब से यही अपेक्षा है कि इसको क्रियान्वित करिए ठीक ढंग से और इसका प्रचार होना चाहिए। इस पर समय देना चाहिए। लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग के एक–एक व्यक्ति को, चाहे अधिकारी हो कर्मचारी हो इससे जुड़ एनजीओ के लोग हो, सिविल सोसाइटी के लोग हों स्वयं सेवक हो, सबको समय देना चाहिए। कि उनका काम सिर्फ एकांगी नहीं है कि सिर्फ एक काम में लगे हुए है उनका काम बहुआयामी है। और अंततोगव्वा लोगों की आदतों में बदलाव लाये। और स्वच्छता हमारे मन में है, हमारी आदतों में आ जाये और उसके बाद आप देखिएगा कि जो लोगो को इलाज कराने में खर्चा आता हैं या सरकार को इलाज के लिए प्रबंध करने में खर्च करना पड़ता है उसमें जरूर कमी आयेगी। और इन्हीं शब्दों के साथ मैं उन सभी गांव के लोगों को अपनी शुभकामनाएं देता हूं जहां के लिए ये योजनाएं बनी है जिसका आज उदघाटन हुआ है, शिलान्यास हुआ। एक ही बात आखिर में सुझाव देंगे आपको, अब तो आप जानते हैं कि संचार माध्यमों का पूरा विकास हो रहा है एक काम आप कीजिए और वो काम यह करिए कि आप अपने डिपार्टमेन्ट में बाजाप्ता कॉल सेन्टर की तरह एक सेन्टर चलाइये और उसके फोन नम्बर को पूरे बिहार में पहुंचाइये ताकि कोई गांव से, अगर उसका चापाकल खराब हो गया है या पेयजल आपूर्ति योजना में कोई खामी आ गयी है तो आपको वो फोन से सूचना दे सके और उसके बाद आप तदनुरूप संबद्ध विभाग अपने वहां के जूनियर इंजिनियर, असिस्टेन्ट इंजिनियर को

सीधे आप खबर दे सकें आज कल ये जमाना आ गया है कि आप बगैर कोई समय लगाये। अगर यह व्यवस्था कर दे, इसको प्रचारित कर दे। तो किसी भी स्किम के बाद उसका मेन्टेनेन्स बहुत इर्म्पाटेंन्ट होता है। तो आज आपने मुझको बुलाया है तो ये बात आपलोग शुरू कर दिजिए और जल्दी से जल्दी आप आपने विभाग मे एक ऐसी व्यवस्था करा दीजिए ताकि पेय जल से सम्बन्धित कोई भी योजना है उसमें किसी भी प्रकार की खामी आती है तो आपको सूचना मिल जाये और समय–समय पर आप एनालासिस भी कर सकते है या फिर किस प्रकार की खराबी आ गयी है। और जब आपका नेटवर्क लोगों के साथ इस प्रकार से जुड़ जायेगा तो आप अपनी तरफ से लोगों के मोबाईल पर फोन लगाकर पूछ लिजिए तो आपको भी जानकारी मिल जायेगी। लोग करेंगे और एक तरह से टू वे ट्रेफिक हो जायेगा। तो इससे निरंतर सुधार आयेगा और इस कार्य में लगे हुए जितने लोग है वे हमेशा चौकन्ने रहेंगे। कि भाई हम ध्यान नहीं देंगे तो हमको तो पटना से फोन आ ही जायेगा। इसलिये अच्छा है कि अपना काम करो और आपको असेसमेन्ट करने का भी मौका मिलेगा आपके नीचे के अधिकारी के इलाके से अगर सबसे ज्यादा शिकायत आ रही है तो इसका मतलब है कि वो सोये हुये है और आज कल तो खुब चल पड़ा बोतल बंद पानी तो फिर इसका मतलब है बोतल वाला पानी पी रहे है और किसी पर ध्यान नहीं दे रहे है। अब देखिए गांव–गांव पहले तो हमलोग चुनाव लड़ते थे इसकी कल्पना भी नहीं कर सकते थे कि बोतल बंद जो पेय जल होता है जिसको हम लोग बोल देते है मिनिरल वाटर मिनिरल वाटर एक अलग चीज है उसका प्रयोग करेंगे लेकिन आज आप किसी भी गांव मे जाइये तो तुरत वो दो बोतल पानी रख देगा। तो बोतल के पानी का इतना प्रचार हो गया कि गांव वाला भी समझने लगा कि अरे बाहर के लोग है ये लोग बोतल वाला ही पानी पीयेंगे। और पहले

लोग बुरा मानते थे अगर गांव में कोई पानी नहीं पिया तब तो उनका वोट गया कि पानी नहीं पी सकते हमलोगों के यहां। हमको याद है 77 का चुनाव लड़े थे तो हम खद्धा का पानी पिये थे। हम पानी मांग दिये हमकों प्यास लगी थी। उन्होंने कहा यहां चापाकल कोई काम नहीं कर रहा है हमलोग तो गढ्ढा का पानी पी रहे है। हम भी पियेगे पीये, उसमें कोकड़ कम थी कुछ हुआ नहीं। तो उसी समय से ये बात हमारे दिमाग में थी। तो अब फिर से माहौल ऐसा बन जाये कि जिस गांव में जाइये तो उस गांव का पानी न पीये तो वोट खराब हो जायेगा। ऐसा माहौल फिर से बना दीजिये अब त पीना ही है त बोतल वाला पानी पिये तो ऐसा... लेकिन आपको अपनी पेय जल आपूर्ति योजनाओं को उस लायक बना देना चाहिए ताकि लोग भी पीये और उस पानी को आप अभी दिखला रहे थे कि आम व्यक्ति भी यहां का पानी खुद पिये। ये शिशिर सिन्हा जी अभी बता रहे थे। तो अब इसी तरह की व्यवस्था रखिए कि सब लोग वह पानी पीये जब हम समझते है की लोगों के लिए ठीक है, तो हम लोगों के लिए भी ठीक होना चाहिए, सबके लिए ठीक होना चाहिए। तो उस तरह की व्यवस्था हो और उस लक्ष्य को आप प्राप्त कीजिए। और इसके लिए आवश्यक है कि कोई खराबी आवे तो सूचना हो जाए और सिर्फ सूचना न हो जाए प्रो एक्टिव एक सेल बनाई जाये। जो सूचना आए उसपर तत्काल एक्शन हो सके और वो आरटीआई में पूछ भी सकते हैं कि आपको कितना फोन आया? किस किस प्रकार की शिकायतें आई और शिकायत के परिमार्जन के लिए आपने क्या किया? तो फिर ये कुल मिलाकर एक सिस्टम प्रभावी हो जाएगा, फंक्शनल हो जायेगा, प्रभावी हो जायेगा। तो इन्हीं शब्दों के साथ आप सब को अपनी शुभकामनाएं देते हुए मैं अपनी भाषण समाप्त करता हूं। बहुत बहुत धन्यवाद।